।श्री स्वामी समर्थ अमृत रक्षा शाबर मंत्र।

ॐ परब्रह्म परमात्मने नमः
उत्त्पती स्थिती प्रलय कराय ब्रह्म हरी हराय
त्रिगुणात्मने सर्व कौतुकानी दर्शय दर्शय स्वाः
स्वामी देवे कमल का फुल, कमल के फुल में सच्ची मिठाई
अमृत रक्षा देने भवँर को कमलदल में छिपाई
ॐ गणपती यहाँ पठाऊ तहां जावो
दस कोस आगे जा दस कोस पिछे जा
दस कोस सज्जे दस कोस खब्बे
मैया गुफा की आज्ञा मन रिध्दी सिध्दी देवी लान
अगर सगर जो न आवे तो माता पारवती की आन
जय हो मंगलमुर्ति गणेश जी रक्षा करो रक्षा करो भगत की
ॐ गनपत वीर जो फल माँगू सो फल आन
गनपत के छत्र से बादशाह डरे
राजा के मुख से प्रजा डरे हाथा चढ़े सिंदूर
औलिया गौरी का पुत गनेश गुग्गुल की ढेरी
रिध्दी सिध्दी गनपत धनेरी जय गिरनार पती चिंतामणि
रक्षा करो मेरी हे मेधा पती
आद अंत धरती आद अंत परमात्मा दोनो विच बैठे शिवजी महात्मा
खोल घडा दे दडा देखा शिवजी महाराज तेरे शबद का तमाशा
रक्षण करके सारी बुराई को देवे झासा
गौरी गौरी शिव की जोरी संकट को जोर से मारी
जरा दलिद्रय को मुल से सवारी
सुख समृध्दी फुलावे गौरामाई पाप हारी
रक्षण करो रक्षण करो जय अंबे सुखकारी
कुट कुट कोटन को काटे खोल खोल भागन को खोले

हरे मुरुगा हरे मुरुगा शिवा कुमारा हरो हरा
हरे कंधा हरे कंधा हरे कंधा हरो हरा
हरे षण्मुखा हरे षण्मुखा हरे षण्मुखा हरो हरा
हरे वेला हरे वेला हरे वेला हरो हरा
हरे मुरुगा हरे मुरुगा ॐ मुरुगा हरो हरा
रक्षा करो रक्षा करो हरे कंधा रक्षा करो
झोली भरो झोली भरो हरे कार्तिका झोली भरो
ग्यान के सागर में होवे हाथी की सुंड
कमल के आरों में शोभे विष्णुजी का पिंड
रक्षावे भगत दुरावे माया का बहाना
चुनके दिलावे भक्ती शक्ती का खजाना
लक्ष्मी माई सत्य की सवाई आवो माई करो भलाई
विष्णु प्रिया लक्ष्मी शिव प्रिया सती से प्रकट हुई कामाक्षा भगवती
आदिशक्ती युगल मुर्ती अपार दोनो की प्रीती अमर जाने संसार
रक्षा कर महामाई आय बढा व्यय घटा
दरिद्रय रोग को मुलसे काटा दुख भोगन को देवे सोटा
चुटकी बजाके क्षण में दिलावे सोने का लोटा
धन की बौछार करके रक्षा करो लक्ष्मी माई
सुंदर करो जीवन पुत्र पौत्रन से फुलाई
चारों वेदसे भरा है आंगन चौसठ कलाओं से फुला है चमन
धर्म गिता ग्यान से चमकावे भांडार
पुरावे आठो सिध्दी खोलके माया किवार
अधिपती ब्रह्मा राजन का दरबार
भगत की रक्षा करावे लोह की दिवार
श्री सरस्वती माई स्वर्ग लोक बैकुंठ से आई
शिवजी बैठे अंगुठ मरोड देवता आया तेतिस करोड
संत भक्तन की रक्षा करे दैत्योंका भक्षण करे
विद्या दिलाके ग्यान स्फुरावे सरस्वती दिनन की रक्षा करावे

ॐ ऱ्हिं श्रीं चामुंडा सिंह वाहीनी बिस हस्ती भगवती
रत्न मंडीत सोनन की मालउत्तर पथ में आप बैठी
हाथ सिध्द धन धान्य देहि देहि रक्षा करो मेरी माई
नकदी दौलत सोनन को पुराई
जय हो माई जय हो माई राखो मेरा मान
सुख रक्षा अंजन करके दिलावे सन्मान
जय मल्हार जय मल्हार घोडे पे होके सवार
सिंहासन पर बैठे दास झुलावे चवार
भुतन मारे टोना टंबर को टाले रक्षण कराके नसीब का ताला खोले
चल चल चले नवग्रहों का मेला सवांरे नसीब देवे सुभाग्य का थैला
शतरंज खेलके मौज में फेके फासा
ग्रह तारका रक्षण करावे पुत की खासा
माटी का कुंडा कुंडे में पिंड राखन कराके झुल झुलावे ब्रह्मांड
काली काली महाकाली चमकाके बिजली बजावे ताली
काली काली इंद्र की बेटी ब्रह्म की साली
पित भर भर रक्त प्याली उठ बैठी पिपल की डाली
दोनों हात बजाए ताली जहाँ जाये वज्र की थाली
वहाँ न आए दुश्मन हाली सदा करे दुर्भोगन को खाली
रक्षण करावे जय हो महाकाली
वीर वीर बावन वीर नाम लेवे तो जलावे तीर
जंगडी तंगडी लंगडी पुकार के होवे भांगडी
जय हो महावीर विजय तो पहने सफेद पगडी
दक्ष दक्ष साजे रक्षण की रक्ष रक्ष राखे भक्तन की
कुबेर कुबेर परचंड धन के पाली
लज्जा राखो भक्तन की हे रखपाली
आठों दिशा से भंडार भरता भारी
धन ज्योत जगाओ कडकापन को मारी

निगरानी करके हिफाजत करना मेरी
बढाओ मंजिल दौलत की होके सवारी
ॐ नमो हनुमंत वीर धरती आकाश धरती पीता धरती धरेना धीर
बाजे सिंगी बाजे तर्तरी आयो गोरख नाथ
मीन का पुत मुंज का छडा लोहे का कडा
हमारे पिठ पिछे वीर हनुमंत खडा
वज्र का कोठा जिस में पींड हमारा बैठा
इश्वर कुंजी ब्रह्म का ताला इस घट पिंड का यती हनुमंत रखवाला
पाताल के बादशाह पाताल के शहंशाह
नागों के राजा ईशाधारी ईशा काम पुरन करनी मणियों के राजा
मणियों मे रहना मणि अमर अमृत कुंड के देशा
नागन के राजा राणी बैठे पाताल के देशा
ईशा पूरवाके रक्षा भक्तन की करनी
आस पुरावे जय हो नागन की राजा रानी
आद भैरो जुगाद भैरो भैरो है सब भाई
भैरो ब्रह्मा भैरो विष्णु भैरो ही भोला साई
भैरो देवी भैरो देवता भैरो सिध्द भैरोनाथ
गुरु भैरो पीर भैरो ग्यान भैरो ध्यान
भैरो योग वैराग भैरो बीन होय ना रक्षा भैरो बीन बजे ना नाद
काल भैरो विकराल भैरो घोर भैरो अघोर भैरो
भैरो की कोई ना जाने सार भैरो की महीमा है अपरंपार
श्वेत वस्त्र श्वेत जटाधारी हत्थ में मुदगर श्वान की सवारी
सार की जंजीर लोहे का कडा जहां सिमरु भैरोबाबा हाजिर खडा
कड कड कडके बीजली कडके रक्षा करने चौसठ भैरो भडके
बज्र बज्री बज्र किवाड बज्री में बांधा दशोद्वार को घाले
उलट वेद बाही को खात पहिली चौकी गणपती की
दुजी चौकी हनुमंतजी की तिजी चौकी भैरव की

चौथी राम की पाचवी कृष्ण की छटवी चामुंडा की
सातवी महाकाली की आठवी महीषासुर मर्दीनी की
नौवी तैतीस करोड देवता की
रक्षा करने को श्री नरसिंह देवजी आए
साथ साथ आवे उनके रखवाल
भगत की रक्षा करावे आठों दिक्पाल
जादू टोना ठोकके मार भगावे
भाग्य विधाता होके भक्तन का जीवन फुलावे
जय हो स्वामी जय हो स्वामी जय हो तेरी सवारी
रक्षा करके मेरी सदा सत्य को फवारी
हाथ में दंडा सिर पे पगडी झुले हो महाराज
दिव्य अंजली पान से प्यास बुझावे आज
नौ रंगो की चुनरी ओढके खुष करे जहान
दिव्य ग्यान बुटी दिलाके बनावे सबसे महान
अटक मटक चटक लटक लटक सटक तटक
पेहरा देके याचक के दुभार्ग झट से पटक
कोटन सुरज का तेज कोटन चांद की ठंडी करे पालन पोषण
कोटन स्वामी के हाथ रक्षण करावे दिल से भावन
सदाही जय हो तुम्हारी अवलिया स्वामी साई
कोटी छत्र छाया देकर करो भगत की भलाई
ॐ स्वामी ॐ स्वामी ॐ स्वामी